रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 47 ● अंक – 17 ● कानपुर 1 से 15 सितम्बर 2025 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शीर्ष तक पहुँचाने में एक जुट हो जायें

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

कल, आज और कल भी - हर पल - हर - घड़ी आप के साथ

अनावश्यक उत्तेजना लाभकारी नहीं

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटे उत्तर प्रदेश के कुछ ज़िलों में पिछले कुछ हफ़्तों से तमाम तरह की बातें उभर कर आ रही थीं कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थाओं द्वारा तरह–तरह के भ्रम फैलाये जा रहे थे, मान्यता को लेकर सवाल उठाये जा रहे थे, कहीं सरकारी बोर्ड के गठन की चर्चा हो रही है तो कहीं यह कहा जा रहा था कि उत्तर प्रदेश में राज्य सरकार द्वारा एक ही संस्था को शासनादेश हुआ है लाभ भी इसी संस्थान को होगा, अब हमारा क्या होगा! आदि–आदि बात, सत्य तो यह है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्षेत्र की अग्रणी संस्था बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिए 04 जनवरी, 2012 को एक शासनादेश बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के लिये जारी किया गया था और यही एक मात्र प्रदेश की इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्था है जिसे यह गौरव प्राप्त है।

ज़ाहिर सी बात है कि प्रदेश सरकार जब भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये काई निर्णय लेगी तो बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 को नज़र अंदाज़ नहीं कर सकती है।

ऐसा लगता है कि जैसे लोगों की बरसों की मुराद जल्द पूरी होने वाली है इसलिये सब एक सु:खद भविष्य की कल्पना में डूबे हुये योजनायें बना रहे हैं योजनायें बनाना बुरी बात नहीं होती है जो काम योजना बना कर किया जाता है सामान्यतय: वह कार्य पूरे होते हैं परन्तु योजनायें तभी बनानी चाहिये जब उसके सारे पक्ष सुस्पष्ट रुप से मज़बूत हों, योजनाओं को फलीभूत होते देखना तो हर व्यक्ति का सपना होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भी आजकल योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रही है, बचे हुये शेष चार महीनों में अभी कई परिवर्तन आयेंगे और इन परिवर्तनों से हम सब को जूझना पड़ सकता है विदित हो कि वर्ष 2027 में उत्तर प्रदेश में चुनाव भी होने हैं, ऐसे में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को विराम नहीं देना है बल्कि अपनी गति को और तेज़ करना होगा, यदि सरकार की मंशा ठीक–ठाक रही तो शीघ्र ही इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की दिशा और दशा सुधरने की दिशा में वास्तविक कार्य प्रारम्भ हो जायेगा वर्ष 2026 चुनावी वर्ष होगा ऐसे में सरकार से किसी सकारात्मक परिणाम की अपेक्षा की जा सकती है, सरकारी बोर्ड के गठन के कार्य यह प्रक्रिया छोटी भी हो सकती है और लम्बी भी हो सकती है, जो भी हो प्रतीक्षा तो करनी ही होगी इसलिये मन को प्रसन्न तो रखिये परन्तु कल्पनालोक में विचरण मत कीजिये।

एक संस्था तो अभी से बाकायदा प्रसारित कर रही है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के चिकित्सकों को सरकारी नौकरियां मिलेंगी इस भ्रामक प्रचार से चिकित्सकों के मन में तरह–तरह के भाव जागृत हो चुके हैं, जब कानून बनेगा, नियमतिकरण होगा तो निश्चित रुप से हमें वह सारे लाभ मिलेंगे जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त होते हैं परन्तु इस अवसर के लिये आपको अभी प्रतीक्षा करनी होगी।

हम सभी जानते हैं कि लगभग डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक समय से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का प्रचार व प्रसार सम्पूर्ण भारत वर्ष में है और इन डेढ़ सौ वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की संख्या बढ़कर लाखों में हो गई है और इतनी बड़ी संख्या अब अपना अधिकार मांगने लगी है, आज़ादी के 78 वर्षों के बाद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये किसी नीति का निर्धारण नहीं होना नितान्त दु:खद है।

जो लोग वर्षों से इस चिकित्सा पद्धति से जुड़े हैं उनके मन में कहीं न कहीं यह टीस है कि सरकार लगातार उनकी उपेक्षा कर रही है, उपेक्षा सहन करने की भी एक सीमा होती है और जब सीमायें टूटने लगती हैं तब आन्दोलन मुखर हो जाते हैं, आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी की यह हालत इसी कारण हुई है क्योंकि सरकार लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विनियमित करने से कतराती रहती है, कमेटियां बनाती है, जाँच रिपोर्ट आती है और फिर कोई न कोई कमी बता कर सरकार नियमतिकरण से बचती रहती है परन्तु इस बार कुछ आशा बलवती है कारण अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास पहले की अपेक्षा अधिक हो चुका है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास 21 जून, 2011 व 04 जनवरी, 2012 जैसे मज़बूत अस्त्र हैं इन अस्त्रों को सरकार कब तक नज़र अन्दाज़ करेगी सरकार भली भांति यह जानती है कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का संख्या बल इतना अधिक है कि किसी भी आन्दोलन को गति देने में ज़रा भी देर नहीं लगेगी इस बार सरकार ने अपनी गति धीमी ज़रुर रखी है परन्तु उसकी इच्छा स्पष्ट नज़र आ रही है कि अब सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कुछ न कुछ नीतिगत फैसला लेकर ही रहेगी।

अब यह हम सब का दायित्व है कि हमारे साथी ऐसा कोई कदम न उठा लें जिससे कि सरकार को बच निकलने का कोई अवसर प्राप्त हो जाये, मैकेनिज़्म के नाम पर सरकार ने जो कुछ भी जानना चाहा है उसके स्पष्ट उत्तर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास उपलब्ध हैं राजस्थान व मध्य प्रदेश के बाद अब नम्बर उत्तर प्रदेश का है, हम सब दिसम्बर के बाद जिस परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहे हैं निश्चित रुप से इस बार हमें निराशा नहीं मिलेगी निश्चित रुप से सरकार मानक बनाने की दिशा में मज़बूत कदम उठायेगी, यह मानक क्या होंगे ? कैसे होंगे ? यह तो पता नहीं है लेकिन जो भी होगा अच्छा होगा, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक दिशा तय करेगा, हमारे जो साथी सरकार के कदम को मान्यता के रुप में देख रहे हैं उन्हें भी प्रसन्न रहना चाहिये क्योंकि सरकार का यह व्यवहार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की मान्यता के लिये उठाया गया एक मज़बूत कदम ही है, जिन लोगों के मन में कई तरह के सपने जन्म ले रहे हैं उनके सपनों को पूरा होने का समय आ रहा है परन्तु सपने ऐसे देखने व दिखाये जाना चाहिये जिससे कि किसी की भी भावनायें आहत नहीं हों क्योंकि यदि भावनायें आहत होती हैं तो अविश्वास का जन्म होता है और अविश्वास कार्य को प्रभावित करता है अत: दिसम्बर को लेकर जो मन में सपने पाले हैं उन सपनों को साकार करने के लिये लग जाईये सरकार अपना काम करेगी आप अपना काम करें।

यद्यपि सरकारी अधिकारी, अधिकारियों के रवैयों में भी अब सकारात्मकता दिखने लगी है और प्रदेश के अनेक सी0 एम0 ओ0 ने तो यह स्पष्ट भी कर दिया कि यदि बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से पंजीकृत चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर रहा है तो विभाग को कोई आपत्ति नहीं है वह अधिकार पूर्वक अपना कार्य कर सकता है "महानिदेशालय/शासन से प्राप्त निर्देशों के अनुसार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक जो बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 में पंजीकृत हैं पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति से चिकित्सा सेवायें प्रदान करने पर कोई रोक नहीं है।"

आज स्थिति यह है कि आने वाले दिनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी अन्य चिकित्सा पद्धतियों के मध्य मज़बूती से अपना दावा प्रस्तुत करेगी।

प्रदेश के हर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक के साथ हम कल भी साथ थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे हमें बस आपके सहयोग की अपेक्षा है।

- ✓ सतर्कता अब पहले से ज़्यादा
- ✓ संयम की अभी भी आवश्यकता
- ✓ मानसिक स्तर पर सब एक हैं
- ✓ सफ़लता में नहीं है कोई संशय

राजस्थान और इलेक्ट्रो होम्योपैथी

संसार में ज्ञान की सदैव से पूजा होती चली आयी है क्योंकि ज्ञान ही अज्ञानता के तिमिर को हटाता है यदि मनुष्य के मन में अज्ञानता बनी रहती है तो वह व्यक्ति न तो अपने लिए कुछ कर पाता है और न ही समाज को कुछ दे पाता है।

ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने वाले हर प्राणी का यह दायित्व होता है कि समाज के नियमों और परिनियमों का पालन करते हुए समाज को एक मर्यादित रूप में संचालित होते रहने की कल्पना को साकार करे, ज्ञान जब अभिमान बन जाता है तो यह अभिमान ज्ञानी पुरूष के लिए अभिशाप भी बन जाता है और शनैः शनैः वह अज्ञानी व्यक्ति स्वतः ही रसातल में चला जाता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी बहुत सारे ज्ञानी व्यक्ति हैं जो समय समय पर अपने ज्ञान का प्रदर्शन करते रहते हैं जब तक उनका ज्ञान समाज के लिए लाभकारी होता है तब तक तो समाज उसे स्वीकार करता है लेकिन जब दिया गया ज्ञान सीमाओं को तोड़ने लगता है तब न तो वह व्यक्ति स्वीकार होता है और न ही उसकी बतायी हुई बातें।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बीते कुछ दिनों से ऐसी ऐसी बातें सामने आयी हैं जिनपर भरोसा करना मुश्किल होता है इस पर जो हमारे ज्ञानी जन हैं वह कुछ इस प्रकार के तर्क देते हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो ज्ञान का सारा भण्डार उन्हीं के पास है, पिछले दिनों राजस्थान के सन्दर्भ में जिस प्रकार की बातें सामने आयीं वह कभी तो पछतावे की तरफ और कभी छलावे की तरफ इंगित करती हैं, यह बहुत सुन्दर और अच्छी बात है कि किसी राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सरकारी विधेयक लाया गया परन्तु उसका जिस तरह से प्रस्तुतीकरण किया गया वह किसी भी स्तर से दूरगामी सोच वाला नहीं है।

हमारे साथियों को अपने ज्ञान पर इतना अभिमान है कि वह सामने वाले को मूर्ख के अलावा कुछ नहीं मानते हैं, यह बात कभी भी नहीं भूलनी चाहिये कि मूर्ख कभी कभी ऐसी परिस्थिति पैदा कर देता है कि जिससे उबरने में ज्ञानियों को भी सारी ऊर्जा लगा देनी पड़ती है, किसी कवि ने बड़ी सुन्दर बात कही है कि.............. हरियाणा एक ऐसा राज्य है जिस राज्य से सबसे ज्यादा उपदेशक और धर्म प्रचारक पैदा होते हैं, हर व्यक्ति एक दूसरे को उपदेश और ज्ञान देता है इसी प्रसंग में एक ज्ञानी, एक सीधे सादे व्यक्ति को ज्ञान देने लगा, तब उस व्यक्ति ने बहुत ही मार्मिक और सटीक उत्तर दिया कि वर्षों पहले भगवान श्री कृष्ण कुरूक्षेत्र में ज्ञान दे गये थे अब हमें ज्ञान की क्या जरूरत, कहने का तात्पर्य यह है कि किसी की बातें तब तक सुनने और समझने में रोचक लगती है जब तक सुनने वाला व्यक्ति यह समझकर सुनता है कि जो कुछ भी हमें सुनाया जा रहा है वह सत्यता से परे नहीं है और वास्तविकता के करीब है परन्तु बात जब समझ में न आवे तब वह बात न तो सुनने में अच्छी लगती है और न ही समझने में।

आने वाले समय में अब जो कुछ भी होगा, निश्चित रूप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक दिशा तो तय कर ही देगा अभी हाल ही में राजस्थान प्रदेश के डिप्टी सी0एम0 डा0 प्रेमचन्द बैरवा का रास्थान इलेक्ट्रोपैथी बोर्ड के गठन करने के उपलक्ष में राजस्थान इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा परिषद द्वारा अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलगुरु अल्पना कटेजा, आयुष विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुबीर कुमार, आयुर्वेद विभाग के निदेशक श्री आनंद कुमार शर्मा आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री सह डिपटी सी0एम0 डा0 प्रेमचन्द बैरवा ने कहा कि वह शीघ्र ही इलेक्ट्रोपैथी कालेज और रिसर्च सेन्टर का शिलान्यास करेंगे, उन्होने आगे कहा कि तत्काल रु. से इलेक्ट्रोपैथी बोर्ड के लिये गाँधी नगर स्थित विधायक आवास में स्थान उपलब्ध करायेंगे, इसी कार्यक्रम में डा0 बैरवा जी ने बताया कि बजाज नगर में गांधी ग्रामोद्योग बोर्ड के पास 1500 वर्ग मीटर भूमि का आवनटर कर दिया गया है जिसमें बोर्ड का स्थायी कार्यालय का निर्माण शीघ्र आरम्भ कराया जायेगा उन्होने अपने सम्बोधन में बताया कि दिसम्बर से इलेक्ट्रोपैथी में रजिस्ट्रेशन का कार्य प्रारम्भ हो जायेगा इस अवसर पर बोर्ड की वेबसाइट का उदघाटन भी किया।

यह कार्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय के मानविकी सभागार में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा परिषद द्वारा आयोजित किया गया था।

उत्तर प्रदेश शासन
चिकित्सा अनुभाग–6
कार्यालय ज्ञाप
संख्या–2914/पाँच–6–10–23रिट/11दिनांक 04 जनवरी, 2012 के अनुसार

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 भारत सरकार के आदेश दिनांक 25–11–2003 एवं 05–05–2010 के अनुसार पाठ्यक्रम संचालित कर इलेक्ट्रो होम्यापैथी पद्धति की शिक्षा, चिकित्सा, पंजीकरण, अनुसंधान एवं विकास हेतु कार्य करता है।

Offered Courses

Name of the Course	Abbreviation	Eligibility	Duration
Fellow of Medicine in Electro Homoeopathy	F.M.E.H.	10+2 (Any Stream) or Equivalent	Two Years (4 Semester)
Certificate in Electro Homoeopathy	C.E.H.	10th. Standard or Equivalent	2 Years
Advance Certificate in Electro Homoeopathy	A.C.E.H.	RegisteredPractitioner in any Branch or Equivalent	1 Year
Graduate in Electro Homoeopathic System	G.E.H.S.	10+2 (Bio Group) or Equivalent	4 Years Plus (1 Year Internship)
Post Graduate in Electro Homoeopathy	P.G.E.H.	Graduate in any Medical Stream or Equivalent	2 Years

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0

8–लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001
प्रशा0 कार्या0 : 127/204 "एस" जूही,कानपुर–208014
website: www.behm.org.in

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की सेमेस्टर व वार्षिक परीक्षायें 22 सितम्बर 2025 से प्रारम्भ

F.M.E.H./C.E.H./A.C.E.H. की क्रमशः सेमेस्टर व वार्षिक परीक्षायें दिनांक 22 सितम्बर, 2025 से प्रारम्भ होंगी एवं दिनांक 25 सितम्बर को अंतिम परीक्षा होगी सभी परीक्षायें एक पाली में होंगी समस्त प्रवेश पत्र एवं परीक्षा सामग्री सम्बंधित संस्थानों/स्टडी सेन्टर्स/परीक्षा केन्द्रों को दिनांक15 सितम्बर तक उपलब्ध हो जायेगी सम्बंधित छात्र/छात्रायें अपने की संस्थान/स्टडी सेन्टर/परीक्षा केन्द्र से सम्पर्क कर अपने प्रवेश–पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

यह जानकारी गजट को परीक्षा प्रभारी डा0 अतीक अहमद ने एक विज्ञप्ति में दी, परीक्षा कार्यक्रम निम्न प्रकार है:–

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION SEPTEMBER 2025

Name of the course	22nd September, 2025 Monday	23rd September, 2025 Tuesday	24th September, 2025 Wednesday	25th September, 2025 Thursday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy & Philosophy	XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Ophthalmology including ENT	Medical Jurisprudence and Toxicology	Dietetics	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynecology	Materia Medica	Practice of Medicine	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy- Philosophy and Materia Medica	Pathology-Hygiene and Medical Jurisprudence	Midwifery Gynics, Ophthalmology and Practice of Med.
C.E.H. 1st. Professional	Anatomy & Physiology	Introductive Study of Electro Homoeopathic Philosophy & Remedies with its Pathology	Health Education and Community Pharmacy	Drug Chemistry of Electro Homoeopathy
C.E.H. Final Professional	Pharmacognosy	Pharmacology and Jurisprudence	Hospital & Clinical Pharmacy	Drug Store & Management of Electro Homoeopathy

Timing → 8:00 A.M. to 11:00 A.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge

नीला आसमान सो गया

मैटी पुण्य तिथि पर विशेष

आंसुओं में चाँद डूबा रात मुरझाई

आस्थाओं पर विवाद नहीं होना चाहिये

11 जनवरी 1809

04 सितम्बर 1896 या 3 अप्रैल,1896

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक महात्मा काउण्ट सीज़र मैटी का जन्म 11 जनवरी, 1809 को हुआ था, मृत्यु भी हुई थी इस संसार में जो भी प्राणी जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है यह शाश्वत सत्य है लेकिन जो व्यक्ति संसार और समाज के लिये कुछ करके जाते हैं उनकी जीवन एवं मृत्यु की तिथि स्मरणीय रहती है।

जाने कितने ऐसे लोग होंगे जो अपने माता–पिता एवं परिजनों की जीवन एवं मृत्यु की तिथियां याद ही नहीं रखते, इसका कारण यह नहीं है कि उन्हें अपने परिजन प्रिय नहीं हैं, प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिजनों से अथाह स्नेह होता है परन्तु जब वह उन्हें याद कर लेते हैं वही उनके लिये तिथि हो जाती है, महापुरुषों की तिथियां इसलिये भी याद रखी जाती हैं कि इसी बहाने उनके द्वारा किये गये कार्यों का हम बार–बार विवेचना करते रहते हैं और संकल्प लेते हैं कि इस महापुरुष ने जो जनोपयोगी कार्य किये हैं वे आगे निरन्तर बढ़ते रहें, यदि उनमें कहीं कोई कमी आ रही है तो उसे पूरा करने का प्रयास किया जाता है।

महात्मा काउट मैटी चिकित्सा जगत के पूज्य पुरुष हैं, परमात्मा के बाद चिकित्सक ही वह स्थान रखता है जो मानव कल्याण के लिये कार्य करता है, जीवन आराम से चले यह तभी सम्भव है जब मनुष्य तन और मन से स्वस्थ्य रहेगा स्वस्थता के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य को स्वस्थता के सम्बन्ध में ठीक–ठाक जानकारी हो, अगर शरीर पाया है तो व्याधियां अवश्य आयेंगी कहा गया है कि व्याधियों के शमन के लिये प्राणी को किसी न किसी चिकित्सा पद्धति का आश्रय अवश्य लेना पड़ता है, देश, काल और वातावरण के अनुरुप नये–नये शोध होते हैं और इन्हीं शोधों का परिणाम होता है, चिकित्सा पद्धतियां, आदिकाल से मानव को स्वस्थ्य रखने के लिये आयुर्वेद अग्रणी चिकित्सा पद्धति के रुप में रहा परन्तु समय के परिवर्तन के साथ–साथ मनुष्य की जीवन शैली में भी परिवर्तन आता है आहार, विहार, कार्य आदि सभी समय के नुसार परिवर्तित होते रहते हैं, परिवर्तित जीवन शैली में जीता हुआ मनुष्य तरह–तरह की बीमारियां ग्रहण कर लेता है, संसार में कोई वस्तु अपने आप में पूर्ण नहीं है पूर्णता के लिये तरह–तरह के प्रयास किये जाते हैं और यही प्रयास अविष्कार का रुप ले लेते हैं, बहुत सारी कहावतें अपनी परिभाषायें बदल चुकी हैं परन्तु आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है यह आज भी वहीं सत्यता के साथ खड़ी है जैसी कि उदभव के समय थी अविष्कार का ही परिणाम है कि ऐलोपैथी (**Western Medical Science**) ने निस्संदेह इस चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सा जगत में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में इस चिकित्सा पद्धति ने जो सफलता अर्जित की वह आज तक अन्य पद्धतियां नहीं पा पा रही हैं शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में जो आशातीत सफलता इस पद्धति को मिली जिससे इस पद्धति की महत्ता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है परन्तु जहाँ पर बहुत सारी अच्छाईयां होती हैं वहीं कुछ कमियां भी होती हैं, प्रतिकूल प्रभाव (**Side effect**) इस चिकित्सा पद्धति की कमी है, विकल्प की तलाश में कुछ वैज्ञानिकों ने नई–नई तलाश की तभी यूनान के वैज्ञानिकों ने एक नई चिकित्सा पद्धति दी जिसका नाम यूनानी चिकित्सा पद्धति रखा गया।

इसी क्रम में जमनीं में होम्योपैथी, इटली में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की खोज की गयी, यह सारी की सारी चिकित्सा पद्धतियां अस्तित्व में इसलिये आयीं क्योंकि आयुर्वेद और ऐलोपैथी से लोगों को पूर्ण संतुष्टि नहीं मिल पा रही थी, इन्हीं के साथ–साथ कुछ थेरेपियों ने भी जन्म लिया यथा फिज़ियोथिरेपी, क्रोमो – थिरेपी, मैग्नेटोथिरेपी, बैचफ्लावर रेमेडी, मगर इन थेरिपियों में कमी यह है कि किसी भी थेरेपी द्वारा औषधि का मुख से प्रयोग नहीं किया जाता है, इन सबके आविष्कारक हैं, सभी की जन्म और मृत्यु की तिथियां इनके अनुयाईयों द्वारा मनाई जाती हैं लेकिन कहीं पर भी कोई किसी तरह का विवाद नहीं है।

पता नहीं क्यों इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अविष्कारक मैटी के मृत्यु तिथि पर उनके अनुयाईयों द्वारा प्रश्न चिन्ह खड़े किये जाते हैं, मैटी आज हम सब के बीच में सूक्ष्म शरीर के रुप में हैं स्थूल शरीर तो कबका नष्ट हो चुका है बस उनके द्वारा किये गये कार्य ही हमें उन्हें याद करने को विवश करते हैं, कार्य ही पूजा है, कर्म की महत्ता की चर्चा सभी ने की है और व्यक्ति की पूजा जीवन रहते होती है जीवन के बाद कर्म ही पूजे जाते हैं राम, कृष्ण, गुरु नानक, ईसा मसीह, मोहम्मद साहब, सभी के सभी अपने अपने धर्मावलम्बियों के मध्य परमात्मा की तरह पूजे जाते हैं।

क्या आपने कभी सोचा ! कि इनके शरीर नहीं इनके कर्म पूजे जाते हैं इसीलिये जब कर्म ही प्रमुख है तो कर्म की पूजा करें जो तिथि हमें अच्छी लगे उसी तिथि को पुण्य तिथि मानकर श्रद्धा सुमन अर्पित करें चूंकि श्रद्धा वहीं होती है जहाँ व्यक्ति की आस्थायें जुड़ी होती हैं और आस्थाओं में विवाद के लिये कोई स्थान नहीं है विवाद वहां हो जहाँ कुछ खोने और पाने की सम्भावनायें हों, किसी की मृत्यु तिथि की निश्चितता के लिये विवाद को जन्म देना किसी भी तरह से उचित नहीं है महात्मा मैटी सबके हैं यह किसी एक की सम्पति नहीं हैं उनके द्वारा प्रतिपादित चिकित्सा सिद्धान्त का जितना लाभ 04 सितम्बर की तिथि मनाने वाले उठायेंगे उतना ही लाभ 03 अप्रैल स्वीकारने वाले।

संत कबीर के मृत्यु पर भी विवाद है लेकिन जिसकी आस्थायें जिस दिन से जुड़ी होती हैं वह उसी दिन को महत्वपूर्ण मानकर संतुष्ट होता है।

मैटी का उद्देश्य था कि मानव को रोगों से मुक्ति मिले और हम सारे के सारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ किसी भी जाति, धर्म, मज़हब, नस्ल से क्यों न जुड़े हों पर उद्देश्य तो एक ही है कि लोगों को रोग से मुक्ति मिले मानवता का कल्याण हो, जब उद्देश्य एक है तो इस प्रकार के विवादों का कोई स्थान नहीं होता विवाद कार्य को प्रभावित करते हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अभी बहुत आगे जाना है इसलिये इन सब बातों से ऊपर उठकर सिर्फ कार्य संस्कृति पर जोर देना होगा।

इस समय पूरा देश इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये प्रयासशील है, हम सभी का यह कर्तव्य है कि सकारात्मक विचारों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की विकास यात्रा में सहभागिता करें आस्थाओं के साथ हर तिथियां मनायें, मैटी का स्थान हमारे हृदयों में है, हमारी श्रद्धा उनके साथ है।

हम सब इस बात के लिये संकल्पित हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को विश्व पटल पर सिद्ध करें इसी के साथ हम यह कामना करते हैं कि आने वाले वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी सर्वोच्च पर होगी।

चिकित्सा व्यवसाय करने के लिये पंजीयन की आवश्यकता क्यों ?

इसे जानिये और समझिये

आपकी योग्यता व पद्धति तय होती है

चिकित्सकों की श्रेणी में आप चिन्हित हो जाते हैं

अधिकार पूर्वक क्षमतानुसार प्रैक्टिस निडर होकर करते हैं

विभिन्न राज्यों में पंजीयन की स्थिति

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश में अवमाननावाद संख्या 820/2002 में पारित आदेश दिनांक 28–01–2004 के अनुपालन में तथा यू0पी0 क्लीनिकल स्टैब्लिशमेन्ट (रजिस्ट्रेशन एण्ड रेगुलेशन) रुल्स 2016 एवं 3 अगस्त, 2016 को पारित संशोधित आदेश।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में चिकित्सा शिक्षा संस्था नियंत्रण अधिनियम 1973 तेज़ी से प्रभावी हो रहा है।

दिल्ली प्रदेश

दिल्ली राज्य में दिल्ली मेडिकल काउन्सिल द्वारा एण्टी क्वैक्री कमेटी गठित।

उत्तराखण्ड एवं हिमांचल

उत्तराखण्ड एवं हिमांचल राज्य में क्लीनिकल स्टैब्लिशमेन्ट एक्ट 2010 भारत सरकार प्रभावी हो चुका है।

महाराष्ट्र

मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी द्वारा चिकित्सकों के पंजीयन हेतु प्रयास ज़ोरों पर चल रहा है, आशा है कि शीघ्र ही प्रकरण में अधिसूचना जारी हो सकती है।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल में प्रैक्टिशनर रजिस्ट्रेशन एक्ट प्रभावी इसी प्रकार पूरे देश में पंजीयन की आवश्यकता बढ़ती जा रही है आईये हम सब वैधानिक एवं राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करते हुये यथा संभव पंजीकरण करायें।

और

निडर होकर प्रैक्टिस करें

चिकित्सक अधिकारिता जागरुकता अभियान द्वारा जनहित में प्रसारित

बी0 ई0 एच0 एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–14 से प्रकाशित किया।